हजारीमल मुनि स्मृति ग्रन्थ (फोल्डर नं. ९२०४०)

मुख्य टाइटल
निवेदन
समर्पण
ग्रन्थ का कलापक्ष
मदीयम्
प्रधान सम्पादक का निवेदन
प्रथम अध्याय – जीवन, संस्मरण, श्रद्धांजलि और परम्परा दर्शन ---------- १-२५४
मुनि श्रीहजारीमलजी-जीवनवृत्त ---------- १
संस्मरण और श्रद्धाञ्जलियाँ ---------- ६५
संत कवि आचार्य जयमल्लजी-कृतित्व औऱ व्यक्तित्व ---------- १३७
आचार्य श्रीरायचन्द्रजी म. की साहित्यसर्जना ---------- १५६
आशाकिरण आचार्य आसकरणजी ---------- १५९
मुनि रूपचन्दजी – एक खोजपूर्ण आलेख ---------- १६५
तिलोकऋषिजी की काव्य-साधना ---------- १६८
कविवर्य अमीऋषिजी और अमृत काव्यसंग्रह ---------- १७४
दीर्घदृष्टि लोंकाशाह ---------- १७९
लोंकाशाह मत की दो पोथियाँ ---------- १८४
स्थानकवासी परम्परा की विशेषताएँ ---------- १८९
स्थानकवासी जैन समाज रा साचा सपूत ---------- १९४
लोंकागच्छ की साहित्यसेवा ---------- २०३
श्रीलोंकागच्छ की परम्परा और उसका अज्ञात साहित्य ---------- २१४
द्वितीय अध्याय – दर्शन और धर्म ---------- २५५-५२८
अनन्य और अपराजेय जैनदर्शन – श्री ज्ञान भारिल्ल ---------- २५७
कुछ विदेशी लेखकों की दृष्टि में जैन धर्म और भगवान महावीर – श्री महेन्द्र राजा ---------- २७१
आर्हत आराधना का मूलाधार-सम्यग्दर्शन – मुनि श्री मल्लजी ---------- २८०
जैनधर्म के नैतिक सिद्धान्त – डॉ. ईश्वरचन्द शर्मा ---------- २८९
जैन साधऩा – श्री रिषभदास रांका ---------- ३०३
जैनाचार की भूमिका – डॉ. मोहनलाल महेता ---------- ३१०
महावीर और उनके सिद्धान्त – डॉ. जगदीशचन्द्र जैन ---------- ३१८
सर्वधर्मसमभाव और स्याद्वाद – आचार्य श्री तुलसी ---------- ३२१
स्याद्वाद और अहिंसा – श्री सौभाग्यमल जैन ---------- ३२५
जैनदर्शन और विज्ञान – श्री कन्हैयालाल लोढ़ा ---------- ३२८
सप्तभंगी – श्री रूपेन्द्रकुमार पगारिया ---------- ३४१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अनेकान्तवाद – श्री सुरेश मुनि शास्त्री ---------- ३४९
जैनदर्शन – श्री इन्द्रचन्द्र शास्त्री ---------- ३५७
दर्शऩ और विज्ञान के आलोक में पुद्गलद्रव्य – श्री गोपीलाल अमर ---------- ३६८
जीवतत्व-विवेचन – पं. मिलापचन्द कटारिया ---------- ३८९
भारतीय दर्शनों में आत्मवाद – श्री रतनलाल संघवी ---------- ३९५
कर्म-स्वरूप और बंध – श्री राजकुमार जैन ---------- ४०२
प्रश्नोत्तर-अपरिग्रह – श्री जैनेन्द्रकुमार ---------- ४०५
जैनधर्म में भक्तियोग – पं. चैत्रसुखदास न्यायतीर्थ ---------- ४०८
नियति का स्वरूप – डॉ. कन्हैयालाल सहल ---------- ४१५
भिक्षु जमाली और बहुरत दृष्टिवाद – मुनि श्री सुशीलकुमारजी ---------- ४२३
धर्म का वास्तविक स्वरूप – डॉ. भुवनेश्वरनाथ मिश्र ---------- ४२६
गुणस्थान – पं. हीरालाल जैन ---------- ४२९
अनेक तत्त्वात्मक वास्तविकतावाद और जैनदर्शन – मुनि श्री महेन्द्रकुमार ---------- ४२६
हिन्दू तथा जैन साधुपरम्परा एवं आचार – श्री देवनारायण शर्मा ---------- ४४०
सकाम धर्म-साधना – श्री जुगलकिशोर मुख्तार ---------- ४४८
जैन दर्शन में संलेखना का महत्त्वपूर्ण स्थान – श्री दरबारिलाल कोठिया ---------- ४५४
सत्यं शिवं सुन्दरम् – श्री रमेश उपाध्याय ---------- ४६६
मनुष्य जाति का सर्वोत्तम आहारः शाकाहार – श्री शिखरचन्द्र कोचर ---------- ४७०
वर्णों का विभाजन – डॉ. सत्यकाम वर्मा ---------- ४७२
जैन दृष्टिसे मनुष्यों में उच्च-नीच व्यवस्था का आधार – पण्डित श्री बंशिधर ---------- ४७४
वेदोत्तर काल में ब्रह्मविद्या की पुनर्जागृति – श्री जयभगवान जैन ---------- ४८४
जैनमतानुसार अभाव प्रमेय-मीमांसा – साध्वी श्री निर्मलाश्रीजी ---------- ४९४
श्रावक धर्म – डॉ. इन्द्रचन्द्र शास्त्री ---------- ४९९
जन शासन और जिनशासन – मुनि श्री सन्तबालजी ---------- ५१४
सत्याग्रह और पशु – काका कालेलकर ---------- ५१७
पुरुष प्रजापति – श्री वासुदेवशरण अग्रवाल ---------- ५१९
तृतीय अध्याय – संस्कृति, समाज, इतिहास और पुरातत्त्व ---------- ५२९-७१२
भारतीय संस्कृति का वास्तविक दृष्टिकोण – डॉ. मंगलदेव शास्त्री ---------- ५३१
आर्यों से पहले की भारतीय संस्कृति – डॉ. गुलाबचन्द्र चौधरी ---------- ५३९
जैन श्रमणसंघ की शासनपद्धति – मुनि श्री कल्याणविजयजी गणि ---------- ५४३
जैन संस्कृति में समाजवाद – साध्वी श्री उमराँवकुँवरजी ---------- ५५१
प्राचीन भारत की जैन शिक्षणपद्धति – डॉ. हरीन्द्र भूषण जैन ---------- ५५५
मोक्षमार्गस्य नेतारम् के कर्त्ता पूज्यपाद देवनन्दि – डॉ. नथमल टाटिया ---------- ५६३
कर्णाटक के जैन शासक – पं. भुजबली शास्त्री ---------- ५७०
उपनिषद् पुराण और महाभारत में जैनसंस्कृति के स्वर – मुनि श्री नथमलजी ---------- ५७४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वैशालीनायक चेटक और सिन्धु सौवीर का राजा उदायन – आचार्य मुनि श्री जिनविजयजी -- ५७९
भारतीय संस्कृति में सन्त का महत्त्व – श्री कुसुमवतीजी ---------- ५९५
जैनगाम और नारी – श्री कलावती जैन ---------- ६००
श्री एल. पी. जैन और उनकी संकेतलिपि – श्री नथमल दुग्गड तथा श्री तेजसिंह राठोड़ ------ ६०३
दक्षिण भारत में जैनधर्म – श्री श्रीरंजन सूरिदेव ---------- ६०६
वृषभदेव तथा शिव संबंधी प्राच्य मान्यताएँ – डॉ. राजकुमार जैन ---------- ६०९
राजस्थान में प्राचीन इतिहास की शोध – डॉ. देवीलाल पालीवाल ---------- ६३०
कालिदास और विक्रम पर एक विचार – श्री सूर्यनारायण व्यास ---------- ६४१
महावीर और बुद्ध जन्म व प्रव्रज्यायें – मुनि श्री नगराजजी ---------- ६४३
महावीर द्वारा प्रचारित आध्यात्मिक गणराज्य और उसकी परंपरा – भद्रीप्रसाद पंचोली -------- ६४६
रइधू साहित्य की प्रशस्तियों में ऐतिहासिक व सांस्कृतिक सामग्री – प्रो. राजाराम जैन ------ ६५४
धौलपुर का चाहमान चण्डमहासेन का संवत् ८९८ का शिलालेख – रत्नचन्द्र अग्रवाल ---------- ६६६
प्राचीन वास्तुशिल्प – पं. भगवानदास जैन ---------- ६६९
महापंडित टोडरमलजी – श्री अनूपचन्द ---------- ६७३
तुम्बवन और आर्य वज्र – श्री विजयेन्द्र सूरिश्वरजी---------- ६७७
देबारी के राजराजेश्वर मन्दिर की अप्रकाशित प्रशस्ति – रत्नचन्द्र अग्रवाल ---------- ६८६
राजस्थानी चित्रकला – प्रो. परमानन्द चोपल ---------- ६९३
मध्य भारत का जैन पुरातत्त्व – श्री परमानन्द जैन ---------- ६९८
चतुर्थ अध्याय – भाषा और साहित्य ---------- ७१३-९१६
जैन आगमधर और प्राकृत वाङ्मय – मुनि श्री पुण्यविजयजी ---------- ७१५
जैनवाङ्मय के योरपीय संशोधक – श्री गोपालनारायण बहोरा ---------- ७४५
रामचरित सम्बन्धी राजस्थानी जैन साहित्य – श्री अगरचन्द नाहटा ---------- ७४९
जैन कृष्ण साहित्य – श्री महावीर कोटिया ---------- ७५४
राजस्थानी जैन सन्तों की साहित्य-साधना – डॉ. कस्तुरचन्द कासलीवाल ---------- ७६३
तीन अर्धमागधी शब्दों की कथा – डॉ. हरिवल्लभ चुनीलाल भायाणी ---------- ७७१
जैनशास्त्र और मंत्रविद्या – श्री अम्बालाल प्रेमचन्द शाह ---------- ७७३
काहल शब्द के अर्थ पर विचार – श्री बहादुरचंद छावड़ा ---------- ७८०
राजस्थानी साहित्य में जैन साहित्यकारों का स्थान – श्री पुरुषोत्तम मेनारिया ---------- ७८१
प्राचीन दिगम्बरीय ग्रंथों में श्वेताम्बरीय आगमों के अवतरण – पं. बेचरदास जीवराज दोशी --- ७९१
संस्कृत कोषसाहित्य को आचार्य हेमचन्द्र की अपूर्व देन – श्री नेमिचन्द्र शास्त्री ---------- ७९४
अपभ्रंश जैन साहित्य – प्रो. देवेन्द्रकुमार जैन ---------- ८०४
आगमसाहित्य का पर्यालोचन – मुनि श्री कन्हैयालालजी ---------- ८०९
अजमेर-समीपवर्ती क्षेत्र के कतिपय उपेक्षित हिन्दी साहित्यकार – मुनि श्री कान्तिसागरजी ---- ८२५
कर्णाटक साहित्य की प्राचीन परम्परा – वर्धमान पार्श्वनाथ शास्त्री ---------- ८५६
काव्य में अध्यात्म – श्री सुशीलकुमार दिवाकर ---------- ८६१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जैन कथा साहित्य – डॉ. ज्योतिप्रसाद जैन ---------- ८६५
आयुर्वेद का उद्देश्य-संयमसाधना – पं. कुन्दनलाल जैन ---------- ८६७
एक जैनतर सन्तकृत जम्बू चरित्र – श्री भँवरलाल नाहटा ---------- ८७०
पउमचरियं के रचनाकाल सम्बन्धी कतिपय अप्रकाशित तथ्य – डॉ. के. ऋषभचन्द्र --------- ८७७
जैन कथासाहित्य-एक परिचय – प्रो. श्रीचन्द्र जैन ---------- ८८४
मेवाड़ में रचित जैन साहित्य – श्री शान्तिलाल भारद्वाज ---------- ८९०
अपभ्रंश का विकास – डॉ. गोवर्धन शर्मा---------- ९००
पंचम अध्याय – अंग्रेजी विभाग ---------- १-९४
Jainism-A Great religion – Prof. N. G. Suru----------1
Message to Humanity – Prof. G. R. Jain----------4
A Survey of Jaina Religion and Philosophy – Dr. Nathmal Tatia----------8
The Pre-Aryan Sharmanic Spiritualism – Shri Ramchandra Jain---------- 12
Ahimsa, the Basic Social Ethic – Dr. Bool Chand---------- 27
The Doctrines of Jainism – K. B. Jindal---------- 30
The Concepts of Parisaha and Tapa in Jainism – Dr. Kamal Chand Sogani---------- 45
Nature of Divinity in Jaina Philosophy – T. G. Kalghatgi ---------- 63
The non-Violence of Mahatma Gandhi and Gita – Miss Ruth M. Well---------- 68
Some Aspects of Jain psychology as revealed in the Bhagawati Sutra – Dr. J. C. Sikdar---------- 75
The Vratas other than Ahimsa-as Propounded in Jainism – H. Bhattacharya ---------- 88
Shramadan or Voluntary manual labour-the old way – Prof. N. V. Vaidya---------- 94

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org